आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711
पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2021-23

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 9 अंक : 4 दिसम्बर, 2021 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

पशुपालन किसानों की आय बढ़ाने में मददगार

देश के विकास व प्रगति में कृषि व पशुपालन का महत्वपूर्ण योगदान है तथा इन पर ही देश का आर्थिक व सामाजिक ढांचा टिका हुआ है। आज भी देश की लगभग आधी श्रम शक्ति कृषि व पशुपालन में लगी हुई है। भारत की अर्थव्यवस्था में पशुपालन और डेयरी उद्योग का महत्वपूर्ण योगदान है, यह न केवल देश की दो तिहाई आबादी की रोजी–रोटी एवं आजीविका का प्रमुख साधन है, बल्कि हमारी जीवन शैली, संस्कृति एवं सभ्यता का आईना भी है। देश के किसान कृषि के साथ–साथ पशुपालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन, मछली पालन व अन्य सम्बद्ध व्यवसायों से अच्छी आय प्राप्त कर रहे हैं। भारत में खेती आज भी एक जोखिम भरा व्यवसाय है, क्योंकि सालाना आमदनी मौसम पर निर्भर करती है। इसी कारण से खेती की तरफ युवाओं का झुकाव कम होता जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों के युवा शहरों की तरफ पलायन कर रहे हैं क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि योग्य भूमि की कमी व आमदनी घट रही है। ऐसे में कृषि के साथ–साथ वैज्ञानिक पशुपालन व्यवसाय रोजगार के नए विकल्प उपलब्ध करवा रहा है। कोरोना जैसी महामारी में भी कृषि व पशुपालन ने अर्थव्यवस्था को सम्बल प्रदान किया था। रोजगार की दृष्टि से भी कृषि व पशुपालन एक–दूसरे के अनुपूरक व्यवसाय है, क्योंकि कृषि की लागत का एक हिस्सा तो पशुओं से ही प्राप्त होता है। पशुओं का चारा कृषि से मिल जाता है। वर्ष 2022 तक किसानों की आमदनी दुगुनी करने को साकार करने में भी पशुपालन व सम्बद्ध व्यवसाय महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। केवल कृषि से किसानों की आय नहीं बढ़ सकती, इसके साथ वैज्ञानिक व उन्नत पशुपालन पर जोर देकर किसानों की आमदनी को दुगुना किया जा सकता है। राजस्थान जैसे विशाल भू–भाग वाले प्रदेश जहां का अधिकतर इलाका सूखा है और मुख्यतः वर्षा–आधारित खेती है, वहां के किसानों के लिए पशुधन ही आर्थिक प्रगति का मूल आधार है। यहां पशुपालन न केवल लोगों की नियमित आमदनी में सहयोग करता है अपितु प्राकृतिक आपदाओं में सर्वोत्तम वित्तीय सुरक्षा भी प्रदान करता है। साथ ही लघु, सीमान्त व भूमिहीन किसानों के लिए पशुपालन जीविकोपार्जन का एक महत्वपूर्ण आधार भी है। ऐसी परिस्थितियों में किसान व पशुपालक विविध पशुधन उत्पादक प्रणालियों को अपनाकर अपनी आय में सरलता से बढ़ोतरी कर सकते हैं। पशुपालन में विविधता लाकर पारंपरिक पशुपालन (गाय, भैंस, बकरी, भेड़) के साथ सूअर, मुर्गी, मत्स्य, खरगोश, सजावटी मछलियां आदि से पशुपालक की आमदनी बढ़ाने की विपुल संभावनाएं हैं। इसके दृष्टिगत विश्वविद्यालय द्वारा ''पशुपालन नए आयाम'' के माध्यम से किसानों एवं पशुपालकों तक उपयोगी वैज्ञानिक जानकारी पहुचानें का सतत् प्रयास किया जा रहा है।

सभी पाठको को शुभकामनाओं सहित।

प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र को विश्वविद्यालय के नवीन प्रकाशन की प्रतियां भेंट करते हुए कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

कुलपति प्रो. गर्ग ने राज्यपाल से की शिष्टाचार भेंट

विश्वविद्यालय के नवीन प्रकाशनों की प्रतियां की भेंट

वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने राजस्थान के राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र से शिष्टाचार भेंट की एवं विश्वविद्यालय की शिक्षा, प्रसार एवं अनुसंधान प्रगति से अवगत करवाया। इस अवसर पर कुलपति प्रो. गर्ग ने राज्यपाल श्री कलराज मिश्र को विश्वविद्यालय के दो नवीन प्रकाशन 'राजुवास विजन–2030' एवं विश्वविद्यालय के पशुविज्ञान केन्द्रों के नवाचारों से खुशहाल हुए पशुपालकों के 'सफलता की कुछ कहानियां' की प्रतियां भेंट की। गौरतलब है कि वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अतीत में किए गए कार्यों के व्यापक मूल्यांकन एवं भावी चुनौतियों को दृष्टिगत रखते हुए आगामी दस वर्षो में किए जाने वाले कार्यों का रोड़मेप तैयार किया है जो कि विश्वविद्यालय के शिक्षा, प्रसार, अनुसंधान, वित्तीय सुद्दढ़ीकरण एवं पशुपालक एवं पशुकल्याण के दायित्वों के निष्पादन में मार्गदर्शक का कार्य करेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय नियमित रूप से पशुपालकों के ज्ञान एवं कौशल विकास हेतु प्रशिक्षणों एवं प्रसार कार्यक्रमों का आयोजन करता है। विश्वविद्यालय के प्रयासों से बहुत से पशुपालकों ने स्वरोजगार की धारा से जुड़कर अपना आर्थिक उत्थान किया है। 'सफलता की कुछ कहानियां' प्रकाशन में पशु विज्ञान केन्द्रों के नवाचारों से लाभान्वित हुए पशुपालकों की सफलता का विवरण है। इस अवसर पर सुबीर कुमार, सचिव, राज्यपाल भी मौजूद रहे।

अविकानगर में राजुवास की पशुपालन तकनीकी प्रदर्शनी

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर द्वारा दिनांक 20 नवम्बर, 2021 को लघु रोमन्थी पशुपालकों की वर्तमान स्थिति, चुनौतियाँ एवं संभावनाऐं विषय पर राजस्थान, हरियाणा एवं दिल्ली के कृषि विज्ञान केन्द्रों के प्रमुखों एवं पशु विशेषज्ञों की कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. एस.के. गर्ग, कुलपति, राजुवास बीकानेर ने पशुपालन क्षैत्र में पशुपालकों को संगठनात्मक रूप में कार्य करने एवं पशुपालन में वैज्ञानिक पद्धति एवं तकनीकियों को समावेश के साथ करने के लिए प्रेरित किया। कार्यशाला के दौरान प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी लगाई गई। प्रदर्शनी में मॉडल, फ्लेक्स सहित पशुधन उत्पादों का प्रदर्शन किया प्रदर्शनी में मॉडल के माध्यम से स्वदेशी गौवंश को प्रदेश में बढ़ावा देने के लिए कृषकों एवं पशुपालकों को प्रेरित किया गया। प्रदर्शनी में आने वाले सभी पशुपालकों, कृषकों को पशुपालन साहित्य भी वितरित किये गये। कार्यशाला में प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने भी भाग लिया।

कुलपति प्रो. गर्ग द्वारा पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक का अवलोकन

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा संचालित पशुविज्ञान केन्द्र, अविकानगर टोंक का 20 नवम्बर को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने अवलोकन किया। इस अवसर पर प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक, अटारी, जोधपुर डॉ. एस.के.सिंह, निदेशक केन्द्रीय भेड़ एवं उन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर डॉ. अरूण कुमार तोमर, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राघवेंन्द्र सिंह व डॉ. मनोहर सेन उपस्थित रहें। कुलपति ने पशुपालकों के हितार्थ केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी ली तथा महत्वपूर्ण सुझाव दिए। कुलपति ने पशुपालकों को विभिन्न नवाचारों को अपनाकर अपने पशुपालन को उन्नत बनाने का आव्हान किया। इस अवसर अतिथियों ने मिल्क एनालाइजर मशीन का फीता काटकर केन्द्र पर दुग्ध जांच सुविधा का शुभारंभ किया एवं केन्द्र द्वारा प्रकाशित फोल्डर का विमोचन किया गया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने केन्द्र द्वारा संचालित विभिन्न गतिविधियों के बारे में कुलपति को अवगत कराया। इस अवसर पर केन्द्र के डॉ. राजेश सैनी व डॉ. नरेन्द्र चौधरी भी उपस्थित रहें।

यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोंसिबिलिटी

गाढ़वाला व जयमलसर में चिकित्सा शिविर एवं वरिष्ठ नागरिक गोष्ठी का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा यूनिवर्सिटी–सोशल रिस्पोसिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव गाढ़वाला में 30 नवम्बर को आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के चिकित्सा अधिकारी डॉ. राजेन्द्र बिश्नोई के निर्देशन में शिविर का आयोजन किया। शिविर में 91 ग्रामवासियों का उपचार किया गया जिसमे वरिष्ठ नागरिक, महिलाएं एवं पुरूष शामिल थे। शिविर के सह प्रभारी डॉ. जितेन्द्र सिंह भाटी ने ग्रामवासियों को प्रमुख मौसमी बीमारियों जैसे डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया इत्यादि के बचाव एवं उपचार के बारे में जागरूक किया। इस शिविर के आयोजन में जिला आयुर्वेद विभाग, बीकानेर के राम खिलाड़ी प्रजापति नर्सिंग कार्मिक, विपिन कुमार, सरपंच प्रतिनिधि मोहनलाल का सहयोग रहा। जयमलसर में दिनांक 29 नवम्बर को वरिष्ठ नागरिक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें 18 ग्रामवासी लाभान्वित हुए। चिकित्सा शिविर का प्रबंधन डॉ. नीरज कुमार शर्मा, समन्वयक यूनिवर्सिटी सोशल सिस्पोसिबिलिटी, राजुवास, बीकानेर के द्वारा किया।

वन्यजीव देखभाल और प्रबंधन पर सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम का आयोजन

वेटरनरी विश्वविद्यालय में फील्ड वेटनेरियन एवं पशुचिकित्सकों के लिए सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम के तहत "वन्यजीव देखभाल एवं प्रबंधन" विषय पर वन्यजीव प्रबंधन एवं स्वास्थ्य अध्ययन केन्द्र, राजुवास द्वारा सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम हाईब्रिड मोड पर आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने प्रशिक्षार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वन्यजीव जैवविविधता का अहम हिस्सा है अतः उनके संरक्षण हेतु इस प्रकार के कौशल प्रशिक्षणों की नितांत आवश्यकता है। ये प्रशिक्षण प्रशिक्षार्थियों के न केवल ज्ञान एवं कौशल विकास में सहायक है अपितु उनके फील्ड में वन्यजीवों के इलाज एवं प्रबंधन संबंधित आने वाली समस्याओं के निराकरण हेतु भी सहायक है। पाठ्यक्रम समन्वयक डॉ. साकार पालेचा ने बताया कि देश के अलग–अलग राज्यों से 24 प्रशिक्षार्थियों ने इस प्रशिक्षण में भाग लिया एवं 120 घंटे के इस पाठ्यक्रम में वन्यजीव विशेषज्ञों द्वारा कुल 40 व्याख्यान प्रस्तुत किये गए। सात दिवसीय प्रायोगिक प्रशिक्षण सत्र में प्रशिक्षार्थियों को फील्ड भ्रमण एवं कौशल ट्रेनिंग प्रदान की जाएगी। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में निदेशक अनुसंधान प्रो. हेमन्त दाधीच, डॉ. श्रवण सिंह राठौड़ एवं डॉ. महेन्द्र तंवर उपस्थित रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, चूरू द्वारा 9, 11, 16, 18, 25 एवं 27 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 22–23 एवं 29–30 नवम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 152 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 9, 20, 25 एवं 27 नवम्बर को आयोजित एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों एवं 11–12 एवं 22–23 को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों में 198 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 9, 11, 16, 23 एवं 26 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 103 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 10, 12, 16, 22, 24, 26 एवं 29 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 250 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 8, 10, 12, 15, 17, 22, 24, 27 एवं 29 नवम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 220 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 10, 12, 15, 17 एवं 22 नवम्बर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 111 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 9, 11, 15, 17, 22, 24 एवं 26 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 232 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 9, 12, 20, 22, 24, 26, एवं 30. नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरो एवं 15–16, 17–18, 22–23 एवं 24–25 नवम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 296 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर द्वारा 22, 25 एवं 29 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 28 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 9, 15, 20 एवं 24 नवम्बर को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण एवं 11–12, 25–26 एवं 29–30 नवम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत केन्द्र परिसर तथा 16–17 नवम्बर को आत्मा योजनान्तर्गत दो दिवसीय ऑफलाइन प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 283 पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 9, 10, 11, 18, 26, 27, 29 एवं 30 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 165 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 10, 15, 20, 24, 27 एवं 29 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 155 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 9, 11, 15, 17, 20, 23 एवं 25 नवम्बर को ऑनलाइन एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 170 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 10, 12, 15, 16, 18, 22, 23 एवं 26 नवम्बर को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 273 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 23–24 एवं 25–26 नवम्बर को केन्द्र परिसर में आयोजित दो दिवसीय कृषक पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 58 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

राजुवास ई-पशुपालक चौपाल का आयोजन

स्वदेशी गो नस्लों के उचित प्रबंधन से पा सकते हैं अधिक उत्पादन

वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल 10 नवम्बर को आयोजित की गई। स्वदेशी गो नस्लों का अधिक उत्पादन के लिए प्रबंधन विषय पर विशेषज्ञ डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने पशुपालकों से वार्ता की। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने चौपाल में विचार व्यक्त करते हुए कहा कि पशुपालको को स्थानीय जलवायु के अनुरूप पशुओं की नस्लों का पालन करना चाहिए, जिससे कि पशुपालन व्यवसाय की लागत में कमी आती है एवं पशुपालक को अधिक मुनाफा मिलता हैं। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विषय प्रवर्तन करते हुए बताया कि राजस्थान देश में 13.94 मिलियन गौवंश के साथ छठे स्थान पर है साथ ही कुल गौवंश का 83 प्रतिशत देशी एवं अवर्णित नस्ल राजस्थान में उपलब्ध है अतः राजस्थान देशी गौवंश के आधार पर समृद्ध प्रदेश है। इन देशी गौवंश का उचित प्रबंधन करके इनसे अधिक से अधिक लाभ पा सकते हैं। आंमत्रित विशेषज्ञ डॉ. प्रमोद कुमार सिंह, पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय पशु आनुवांशिक संसाधन ब्यूरो, करनाल, हरियाणा ने बताया कि देशी नस्लों में गिर, साहीवाल, थारपारकर, कांकरेज, राठी, मालवी आदि मुख्य है जो कि भौगोलिक स्थिति के अनुरूप प्रदेश के अलग–अलग हिस्सों में पाली जा रही है। देशी एवं स्थानीय गौवंश में संकर गौवंश की तुलना में रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक एवं प्रबंधन लागत कम रहती है यदि इन देशी गौवंश का उचित खाद्य, प्रजनन एवं स्वास्थ्य प्रबंधन किया जाए तो इनकी उत्पादन क्षमता को बढ़ाया जा सकता है।

खनिज लवणों से बढ़ सकती है पशुओं में वृद्धि, उत्पादन एवं प्रजनन क्षमता

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 24 नवम्बर को आयोजित ई–पशुपालन चौपाल में पशु आहार में खनिज लवणों का महत्व विषय पर विशेषज्ञ डॉ. राजेश कुमार सावल ने पशुपालकों से वार्ता की। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि अधिकांश पशुपालक जागरूगता के अभाव के कारण पशुओं को संतुलित आहार एवं नियमित खनिज लवण नहीं खिलाते हैं जो कि पशुओं में वृद्धि दर में कमी के साथ–साथ उत्पादन में भी कमी का कारण बनता है एवं पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है अतः खनिज लवण मिश्रण की पशु आहार में नितान्त आवश्यकता है। आमंत्रित विशेषज्ञ डॉ. राजेश कुमार सावल, प्रधान वैज्ञानिक, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर ने बताया कि पशुओं में शारीरिक वृद्धि एवं दुग्ध, मांस, ऊन उत्पादन हेतु भोजन के आवश्यक घटक कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, वसा के अलावा खनिज लवणों की बहुत आवश्यकता रहती है। पशुपालक सामान्यतः पशुओं को संतुलित आहार नहीं खिलाते हैं जिसके कारण पशुओं में खनिज लवणों की कमी से पशुओं में विभिन्न लक्षण जैसे शारीरिक वृद्धि में कमी, पाचन क्षमता में कमी, प्रजनन क्षमता में कमी, दुग्ध उत्पादन में कमी आदि मुख्य लक्षण दिखाई देते है। अतः पशुपालकों को बड़े पशुओं जैसे गाय–भैंस को 20–25 ग्राम प्रतिदिन एवं छोटे पशु जैसे भेड़ एवं बकरी को 5–10 ग्राम प्रतिदिन के हिसाब से बांटे या चारे में खिलाएं। खनिज लवण मिश्रण के साथ–साथ पशुओं को थोड़ी मात्रा में नमक अवश्य उपलब्ध करवाएं।

बकरियों में घातक हो सकता है ''अम्लता'' एसिडोसिस रोग

बकरी बहुत पुराने समय से पालतू जानवर है। पुरातत्व सर्वेक्षण के अनुसार करीब 10,000 वर्षो से बकरी मानव जीवन से जुड़ी हुई है। सभी पालतू पशुओं में बकरी खुद को विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में आसानी से ढ़ालने में सर्वाधिक सक्षम है। इसलिए बकरियां देश के विभिन्न भौगोलिक भू–भागों में पाई जाती है। बकरी को गरीब की गाय की संज्ञा दी गई है। भारत की कृषि आधारित अर्थ व्यवस्था में बकरी जैसा छोटा पशु महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। अधिकतर बकरी पालन करने वाले बकरियों को खुले में चरने के लिए छोड़ देते हैं जिससे बकरियां अत्यधिक मात्रा में किण्वित होने वाले पदार्थो का सेवन कर लेती है जैसे–अनाज के दाने (ज्वार, मक्का, गेहूं) बासी रोटियां, बासी चावल, सब्जियों के छिलके इत्यादि इससे बकरियों में रूमिनल एसिडोसिस की समस्या हो जाती है। एसिडोसिस एक उपापचय रोग है। यह रूमेन के पीएच में बदलाव के कारण होता है। रूमेन की सामान्य पीएच 6.5–7.5 होती है। रूमेन की पीएच इस बात पर निर्भर करती है कि पशु किस प्रकार का चारा खा रहा है। चारे के पचने के लिए रूमेन की पीएच का नियमित रहना बहुत आवश्यक होता है। पशु द्वारा अत्यधिक मात्रा में आसानी से किण्वित होने वाला मीठा चारा खाने पर रूमेन में अम्ल के उत्पादन की दर अधिक हो जाती है तथा अवशोषित होने की दर उत्पादन से कम होने के कारण रूमेन में अम्ल की अधिकता हो जाती है, इससे रूमिनल एसिडोसिस रोग हो जाता है। एसिडोसिस होने पर पशु को भूख नहीं लगती अथवा कम लगती है। पशु जुगाली करना बंद कर देता है। पशु की पाचन क्रिया बिगड़ जाती है। रूमेन में पानी भरने के कारण शरीर में पानी की कमी हो जाती है। पशु की हृदय गति अधिक हो जाती है तथा श्वांस लेने में कठिनाई होने लगती है। अधिक समय तक उपचार न मिलने पर पशु में दस्त की समस्या शुरू हो जाती है, दस्त में बिना पचा हुआ आहार निकलता है। समय पर उपचार नहीं होने पर पशु की मृत्यु भी हो सकती है। बकरियों में एसिडोसिस के उपचार के लिए पशु को मीठा सोड़ा खिलाने की सलाह दी जाती है। अम्ल उत्पादन में सहायक बैक्टिरिया को रोकने के लिए एंटी–बायोटिक दवा दी जाती है। पानी की कमी दूर करने के लिए रिगर्स लेक्टेट दिया जाता है। इसके अलावा कुछ मल्टी विटामिन आदि दिये जाते हैं। रूमेन के माईक्रोफ्लोरा को सामान्य करने के लिए रूमीनल सप्लीमेंट्स दिये जाने चाहिए, ताकि पशुओं की भूख तथा पाचन में सुधार हो सके। समय पर उपचार मिल जाने पर पशु इस रोग से स्वस्थ हो जाता है। अतः खान–पान में सावधानी एवं समय पर सही उपचार कर हम बकरियों को इस रोग से मुक्त कर सकते हैं।

डॉ. रश्मि सिंह
सहायक प्राध्यापक, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर

रोग निदान के लिए जरूरी है खून की जांच

खून शरीर में होने वाली समस्त जैव रासायनिक एवं रोग प्रतिरोधात्मक प्रक्रियाओं में भाग लेता है अतः पशुओं के बीमार होने की स्थिति में इसमें परिवर्तन स्वाभाविक है। अतः पशु चिकित्सकों द्वारा रक्त की जांच कई प्रकार के रोगों में करवायी जाती है। जब भी पशु में बुखार, खून की कमी या एनीमिया, लीवर, किडनी, हार्ट से सम्बन्धित रोग, रक्त परजीवी रोग आदि के लक्षण दिखाई दें या पशु को ऐसी बीमारी हो जिसका निदान नहीं हो पा रहा हो तो खून की जांच अवश्य करवानी चाहिये। कई बीमारी के प्रमाणिक निदान हेतु भी खून या सिरम की जांच करवायी जाती है। खून की हीमेटोलोजिकल व बायोकेमीकल जांच में खून के कोशिकीय व रासायनिक अवयवों में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर रोग के कारण का पता लगाने में मदद मिलती है।

रक्त की जांच के परिणामों का आंकलनः

लाल रक्त कणिकाएंः सामान्य से कम हिमोग्लोबिन, लाल रक्त कणिकाओं व हिमेटोक्रिट का मान मुख्यतः एनीमिया या रक्त की कमी को दर्शाता है। पशुओं में यह स्थिति अत्यधिक खून बहने के कारण, चोट, दुर्घटना, आदि के कारण लाल रक्त कणिकाओं का नष्ट होना या टूटना जिसे हिमोलाइसिस कहते है, के कारण होती है। लेप्टोस्पाइरा, क्लोस्ट्रीडीयम हिमोलाइटीकम, बैक्टिरिया, इक्वाइन इनफेक्सीयस एनिमिया, रिकेट्सिया, वायरस, ऐनाप्लाज्मासीस, बबेसीओसीस, थाइलेरियोसिस, ट्रीपेनोसीयोसीस, प्रोटोजोल आदि इन्फेक्शन भी इसका कारण होता है। लाल रक्त कणिकाओं के निर्माण में कमी सामान्यतः क्रोनिक रीनल फेल्योर, पोषक तत्वों की कमी– विटामिन बी–12, फोलीक एसिड, आयरन, कॉपर, कोबाल्ट, प्रोटीन, विटामिन आदि की कमी के कारण होती है। सामान्य से अधिक हिमोग्लोबिन, लाल रक्त कणिकाएं एवं हिमेटोक्रिट मान का हिमोग्लोबिन, लाल रक्त कणिकाओं एवं हीमेटोक्रिट का ज्यादा होना पोली सायथिमियां कहलाता है। यह तीन स्थितियों में हो सकता है – निर्जलीकरण, उल्टी, दस्त, पानी की कमी, सर्जीकल शॉक, एबडोमिनल शॉक, इन्टेसटाइनल टॉशन, आदि स्थिति में प्लाज्मा आयतन कम होने से रिलेटीव पोलीसायथिमियां होता है। अत्यधिक एक्सरसाइज व एक्साइटमेन्ट की स्थिति में ट्रांजीयेन्ट पोलीसायथिमिया होता है। क्रोनिक पल्मोनेरी हार्ट डिसीज में हाईपोक्सिया की स्थिति में एब्सोल्यूट पोलीसायथिमिया होता है।

श्वेत रक्त कणिकाएंः श्वेत रक्त कणिकाओं का बढ़ना ल्यूकोसाइटोसिस कहलाता है। यह लोकेलाइज्ड या जनरेलाइज्ड इन्फेक्शन, इनटोक्सीकेशन जैसे (केमिकल, इन्सेक्ट वीनम, एसीडोसीस, यूरीमिया आदि, टिश्यू–नेक्रोसिस, एक्युट हेमोरेज एवं हीमोलाइसीस, केंसर, ल्यूकीमियां आदि निम्न अवस्थाओं में हो सकता है, प्रेगनेन्सी, डर, उत्तेजना, दर्द आदि स्थितियों में भी रक्त में श्वेत रक्त कणिकाओं की सख्या भी बढ़ती है। श्वेत रक्त कणिकाओं की संख्या का कम होना ल्यूकोपिनिया कहलाता है। यह वायरल इन्फेक्शन (केनाइन डिस्टेम्पर, इन्फेक्सीयस केनाइन हिपेटाइटीस, स्वाइन फिवर, पी.पी.आर., आर.पी.) जीवाणुजनित संक्रामण रोगों की प्रारम्भिक एवं अन्तिम अवस्थाओं में, शॉक, डेबीलीटी, पोषक तत्वों की कमी एवं कार्टीकोस्टेरोइड दवाईयों के कारण भी हो सकता है।

रक्त में पांच प्रकार की श्वेत रक्त कणिकाएं पाई जाती हैं न्यूट्रोफिल, इयोसिनोफिल, बेसोफिल, लिम्फोसाइट एवं मोनोसाइट।

न्यूट्रोफिलः न्यूट्रोफिल का बढ़ना (न्यूट्रोफिलिया) स्ट्रेस, ट्रोमा, कैंसर, फॉरेन, बॉडी, शल्य क्रिया, एब्सिस, टोक्सीमिया, इन्टोक्सीकेशन, बेक्टीरियल, माइकोटीक, रीकेटिसीयल इन्फेक्सन आदि अवस्थाओं में होता है। रक्त में न्यूट्रोफिल्स का कम होना (न्यूट्रोफिलिया) तीव्र बेक्टीरीयल इन्फेक्शन, क्रोनिक इन्फेक्शन, शॉक आदि में होता है।

इयोसिनोफिलः इयोसिनोफिल का बढ़ना इयोसिनोफिलिया कहलाता है। यह एलर्जी, परजीवी रोग, चर्म रोग, फेंफड़ों, आंत, गर्भाशय की बीमारियां इत्यादि की अवस्थाओं में होता है। इयोसिनोफिल का कम होना इयोसिनोपिनियां कहलाता है। यह कोटीकोस्टेरोइड थेरेपी, सिस्टेमिक स्ट्रेस इत्यादि अवस्थाओं में होता है।

बेसोफिलः बेसोफिल का बढ़ना बेसोफिलिया कहलाता है तथा यह क्रोनिक रेस्पाइरेटरी डिसीज, हार्ट, वर्म इन्फेस्टेशन, हाइपोथायरोइडिस्म आदि अवस्थाओं में पाया जाता है।

लिम्फोसाइटः लिम्फोसाइट का बढ़ना (लिम्फोसाइटोसिस) क्रोनिक इन्फेक्शन, बबेसीया, थाइलेरिया, ट्रीपेनोसोमा, लिम्क एन्डीनाइटीस, लिम्फेन–जाइटीस, लिम्फोसाइटिक ल्युकीमिया इत्यादि रोगों में होता है। वायरल इन्फेक्शन जैसे केनाल डिस्टेम्पर, इन्फेक्सीयस केनाइल हिपेटाइटीस, पशुमाता, पीपीआर, स्वाइन फिवर, बोवाइन वायरल डायरिया, कोर्टिकोस्टेरोइड थेरेपी, सिस्टेमिक स्ट्रेस आदि में लिम्फोसाइट कम हो जाते है जिसे लिम्फोपीनिया कहते है।

मोनोसाइटः क्रोनिक सुपुरेटिव डिसीज, टी.बी. ब्रुसेलोसिस, सिस्टेमिक माइकोटीक इन्फेक्शन, प्रोटोजोन डीसीज, हिमोलाइटीक एनीमियां, पायोमेट्रा, प्लुरल या पेरीटोनियल केवीटी में एकजुडेट होने पर, स्ट्रेस कोटीकोस्टेरोइड थेरेपी आदि में मोनोसाइट बढ़ जाती है जिसे सामान्यतः मोनोसाइटोसिस कहते है।

ग्लूकोजः डायबीटीज मेलाइटस, पेनक्रीयटाइटीस, क्रोनिक हीपेटीक डीजीज, कोर्टीकोस्टेराईड आदि अवस्थाओं में रक्त में ग्लूकोज की मात्रा सामान्य से बढ़ जाती है। कीटोसिस स्टारवेन, पेनक्रियेटीक टयूमर, इन्सुलीन इन्जेक्शन, हाइपोथायरोइडिस्म आदि अवस्थाओं में रक्त में ग्लूकोज की मात्रा सामान्य से कम हो जाती है।

ब्लड यूरिया नत्रजनः प्रीरिनल डीजीज, हार्ट फैल्योर, शॉक, डीहाइड्रेशन, रीनल डीजीज, पोस्ट रीनल डीजीज, यूरीनेरी ट्रेक्ट परफोरेशन, हाइप्रोटीन रॉशन आदि अवस्थाओं में ब्लड यूरिया नत्रजन सामान्य की तुलना में अधिक बढ़ जाता है।

कोलेस्ट्रोलः डाइबीटीज मेलाइटस, लीवर डीजीज, रीनल डीजीज, हाइपोथायरोइडीज्म इत्यादि अवस्थाओं में कोलेस्ट्रोल बढ़ जाता है परन्तु हाईपरथायरोइडीज्म आदि अवस्थाओं में इसका मान कम हो जाता है।

कुल प्रोटीनः खून का गाढ़ा होना, निर्जलीकरण आदि में इसकी मात्रा बढ़ जाती है। पशुओं कम प्रोटीन युक्त आहार, हीमोरेज, स्ट्रेस इत्यादि स्थितियों में इसकी मात्रा कम हो जाती है।

अतः खून की यदि समय–समय पर जांच हो तो इन बिमारियों का पता लगाया जा सकता है जिससे पशुओं के उपचार में सहायता मिलती है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–दिसम्बर, 2021

पशु रोग	पशु प्रकार	अत्यधिक संभावना	अधिक संभावना	मध्यम संभावना	बहुत कम संभावना
लंगड़ा बुखार	गाय, भैंस	श्रीगंगानगर, जोधुपर			
ब्लू टंग रोग	भेड़	–	–	–	अजमेर, बांसवाड़ा, बाड़मेर, भीलवाड़ा, बीकानेर, जैसलमेर, नागौर, पाली, उदयपुर
खुरपका–मुंहपका रोग	गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊंट	जयपुर, सीकर	अलवर, श्रीगंगानगर, झुंझूनू, टोंक	–	चूरू, बाड़मेर, बीकानेर, दौसा, हनुमानगढ़, नागौर, उदयपुर, बांसवाड़ा, भीलवाड़ा, पाली, बारां, भरतपुर, बूंदी, चित्तौड़गढ़, धौलपुर, डूंगरपुर, जालोर, झालावाड़, जोधपुर, करौली, प्रतापगढ़, राजसमन्द, सवाई माधोपुर,
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	जयपुर	भीलवाड़ा, राजसमन्द, टोंक		बारां,अजमेर, बीकानेर, बूंदी, चितौड़गढ़, चूरू, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, जालोर, झालावाड़, झुंझूनू, जोधपुर, कोटा, नागौर, प्रतापगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, सिरोही, उदयपुर
पी.पी.आर.	बकरी	जैसलमेर, झालावाड़	टोंक	–	–
फेसीयोलोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	बांसवाडा	–	–	–
लंपी स्किन डीजीज़	गाय, भैंस,	श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, कोटा, बारां	–	बूंदी, बीकानेर	–

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के.सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, एवं डॉ. जे.पी. कच्छावा, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर। फोन नं0 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फी नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

डेयरी व्यवसाय को अपनी आय का स्त्रोत बनाकर सफल हुए राजेश पटेल

राजस्थान में किसानों के लिए कृषि के साथ–साथ पशुपालन भी आय का प्रमुख माध्यम रहा है। डेयरी व्यवसाय को अपनी आय का स्त्रोत बनाकर सफल हुए डूंगरपुर जिले के बिछिवाड़ा तहसील ओड़ा छोटा गांव के निवासी राजेश पटेल ने नवयुवकों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है। राजेश पटेल परंपरागत रूप से खेतीबाड़ी तथा पशुपालन से जुड़े थे लेकिन पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आने के बाद वैज्ञानिक तरीके से डेयरी फार्मिंग प्रारम्भ किया तथा उन्होंने 3 भैंसों से डेयरी फार्मिंग शुरू किया। वर्तमान में उनके पास कुल छोटे–बड़े 23 पशु हैं जिसमें 8 सुरती नस्ल की भैंस, 5 क्रॉस ब्रेड नस्ल की गाय तथा 10 बछड़े–बछड़ियों का डेयरी फार्म संचालित कर रहें हैं, जिससे प्रतिदिन 60 लीटर दूध उत्पादन कर साबर कॉपरेटिव डेयरी को बेचते है इससे लगभग 3 लाख रूपये का प्रतिवर्ष मुनाफा कमा रहे हैं। इस सफलता को देखकर आसपास के किसान प्रेरित होकर पशुपालन को आज एक व्यवसाय के रूप में देखने लगे हैं। राजेश पटेल का कहना है कि पशुपालन को वैज्ञानिक तरीके, पशुचिकित्सकों की सलाह तथा पशु वैज्ञानिकों के लगातार संपर्क में रहकर पशुपालन की देखभाल की जाए तो ज्यादा मुनाफा कमाया जा सकता है। पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर के वैज्ञानिकों द्वारा समय–समय पर पशुपालन के नए आयाम तथा नई तकनीकों के बारे में आयोजित प्रशिक्षणों तथा मोबाईल के माध्यम के साथ–साथ ही केन्द्र द्वारा आयोजित प्रशिक्षणों में पशुओं का टीकाकरण, उनकी देखभाल, पशुओं में बांझपन, संतुलित पशु आहार, साईलेज तथा हे बनाने की विधियों के बारे में जानकारी दी जाती है, जिससे क्षेत्र के सभी पशुपालकों को लाभ मिलता है।

सम्पर्क - राजेश पटेल, (मो. 9783175727) गांव ओड़ा छोटा, तहसील–बिछिवाड़ा (डूंगरपुर)

निदेशक की कलम से...

सर्दी में पशुओं को शीतलहर से बचायें

पशुपालन की दृष्टि से सर्दी का मौसम अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि इस समय पशुओं की दूध देने की क्षमता शिखर पर होती है तथा सर्दी में दूध की मांग भी बढ़ जाती है। अतः ऐसे मौसम में पशुओं को सर्दी से बचाव और उसके रहन–सहन तथा आहार का उचित प्रबंधन करना आवश्यक हैं। यदि पशु को ठंडी हवा व धुंध, कोहरे से बचाने का समूचित प्रबंध ना हो तो पशु बीमार पड़ जाते है तथा रहन–सहन व आहार का उचित प्रबंध न किया जाये तो पशु के स्वास्थ्य एवं दुग्ध उत्पादन क्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इस माह में पहाड़ी क्षेत्र में बर्फ गिरनी शुरू हो जाती है जिससे मैदानी इलाकों में तापक्रम कम हो जाता है। इस माह में तापक्रम कम होने की स्थिति में पशुओं को सर्दी से बचाने के उपाय करें। इसके लिए विशेषकर रात में पशुओं को खुले में न बांधे। पशुओं का बिछावन सूखा रखें। पशुओं को सर्दी से बचाने के लिए पशुशाला के दरवाजे, खिड़कियां व अन्य खुले स्थानों पर बोरी, टाट या तिरपाल लगा देना चाहिए जिससे सीधी ठंडी हवा से पशुओं को बचाया जा सके। रात के समय फर्श पर पराली या भूसा फैला दें जिससे पशुओं को फर्श से सीधी ठंड ना लगे। पशुओं को दिन के समय धूप में छोड़े, पशुओं को ताजा व स्वच्छ पानी पिलाएं पशुओं को रात के समय तिरपाल, टाट, बोरी ओढ़ा देवें व दिन में धूप में कपड़ा हटा देवें, यदि शीत लहर अधिक है तो अलाव जलाकर भी पशुओं को सर्दी से बचाया जा सकता है। पशुओं को हरे चारे विशेषकर बरसीम व रिजका के साथ तुड़ी मिलाकर खिलायें। शीत ऋतु में पशुओं के राशन में बिनौला को शामिल करें इससे दूध में वसा की मात्रा बढ़ती है। शीत ऋतु में पशुओं के रहने के स्थान पर सेंधा नमक का ढेला रखना चाहिए जिसे आवश्यकतानुसार पशु चाटता रहें। इस मौसम में पशुओं को संतुलित आहार दें तथा राशन में गर्म तासीर के खाद्य पदार्थ जैसे गुड़, तेल, अजवायन को आहार में शामिल करें। सर्दी के मौसम में खुरपका मुंहपका, पीपीआर जैसी बीमारियों से बचाने के लिए पशुपालन विभाग द्वारा चलाए जा रहे टीकाकरण अभियानों के अन्तर्गत समय–समय पर पशुओं का टीकाकरण अवश्य करवायें।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

RAJUVAS e-पशुपालक चौपाल

।।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।।

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक

राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण
LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एज्यूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया